International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 394-395

प्रेमचंद की कहानियों में युग–बोध

डॉ. विजय शंकर मिश्र

हिन्दी विभाग, सत्यवती कॉलेज (सांध्य), नई दिल्ली, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

पश्चिम के महान् दार्शनिक–चिंतक अरस्तू (एरिस्टॉटल) ने साहित्य और इतिहास पर अपने विचार व्यक्त करते हुए मान्यता रखी थी कि इतिहास तथ्यों से परिचित करता है, लेकिन साहित्य इससे आगे बढ़ कर तथ्यों पर आधारित सत्यों का उद्घाटन कराता है।[1] उदाहरण रूप में संवाद करें तो हम मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब द्वारा अपने भाईयों महान् दाराशिकोह और विलासी शुजा तथा मुराद की हत्या और पिता शाहजहाँ को आगरा के किले में बंदी बनाने के ऐतिहासिक 'तथ्यों' के आधार पर उसकी विगर्हणा कर सकते हैं, लेकिन थोड़ा आगे बढ़ कर विचार करने पर यह अतीव स्वाभाविक कृत्य सिद्ध हो जाता है। संबंधों के नकार और उनकी रागात्मकता की हत्या मध्यकालीन भारतीय इतिहास का 'सत्य' था। शाहजहाँ ने अपने पिता जहाँगीर और जहाँगीर ने अपने पिता अकबर के विरुद्ध सत्ता–प्राप्ति हेतु विद्रोह किए थे। इसलिए औरंगज़ेब के दुष्कृत्य एक–अकेले या आकस्मिक नहीं हो कर ऐतिहासिक सत्य की शृंखला की कड़ी थे। साहित्य इन्हीं सत्यों, मानेकि सामयिक जीवन और परंपराओं–संस्कृतियों की व्याख्या करते हुए युगीन परिवेश–परिस्थितियों का अंकन करता है। भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं एवं जीवन से परिचित होने के लिए महाभारत[2] और रामचरितमानस[3] का अध्ययन इसीलिए अनिवार्य प्रतीत होता है। आधुनिक काल में कथा–सम्राट मुंशी प्रेमचंद के अपार महत्त्व का एक कारण यह है कि उन्होंने युग–बोध को अपूर्व कौशल के साथ व्यक्त किया है। 'हिन्दी साहित्य' शीर्षक ग्रन्थ में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार–विचार, भाषा–भाव, रहन–सहन, आशा–आकांक्षा, सुख–दुःख और सूझ–बूझ को जानना चाहते हैं तो प्रेमंचद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।[4] स्पष्टतया प्रमेचंद का साहित्य युगीन ऐतिहासिक तथ्यों–सत्यों का उद्घाटक है।

कथा–सम्राट ने अपने साहित्य में जाति एवं धर्म के बोध से संबंधित विविध भंगिमाओं को व्यक्त करने में महान सफलता प्राप्त की है। उनकी अनेकानेक कहानियाँ इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। जाति–प्रथा की अटूट शृंखलाएँ प्रेमा से आत्महत्या करवाती है। वे टूट नहीं सकती। अंतिम समाधान आत्मघात ही है क्योंकि 'कायर' के ब्राह्मण केशव और वैश्य प्रेमा का विवाह जाति–व्यवस्था को स्वीकार नहीं है। प्रेमा की माता इस व्यवस्था की नृंशसता से नितांत अपरिचित है। इसीलिए वह प्रश्न करती है कि क्या हिन्दुओं में अंतर्जातीय पाणिग्रहण संस्कार नहीं होते?[5] यह प्रश्न भारत के सामाजिक इतिहास का ज्वलंत प्रश्न है। यही इसकी आत्मा को विवृत करता है। इसका उत्तर अभीतक नहीं मिल पाया। जाति–व्यवस्था की इन्हीं विरूपताओं से दुःखी चमार स्रस्त–त्रस्त है। 'सद्गति' हेतु वह पण्डित जी के समक्ष निरुपाय है। जिन परिस्थितियों में पण्डित जी उससे निजी कार्यों हेतु विकट श्रम करवाते हैं, वह अमानुषिक होते हुए भी सत्य है। दुःखी चमार अंततोगत्वा पंडित जीसे चाहता क्या था। उसकी दर्दनाक मृत्यु जाति पर आधारित समाजों के चरित्रों की भयावह उद्घाटिका है। यह कुत्सित यथार्थ है। इस कहानी में बदलाव कीबड़ी झीनी ही सही, सूचना अवश्य मिलती है। गोंड की सोच और समझ ध्यान देने की है– रोटी मिलेतो पहले, फिर पच ही जाएगी।[6] कई बार जाति–प्रथा भीतर से बहुत लचीली हो जाती है। स्वार्थों की पूर्ति के लिए यह आवश्यक है। 'सवा सेर गेहूँ' में पारंपरिक वर्ण–व्यवस्था से निर्मित कुर्मी कृषक शंकर विप्र जी का एकमात्र रूप देखता है– भुसुर अर्थात् ब्राह्मण का। वह भूल जाता है अथवा वास्तव में सोचना ही नहीं चाहता कि विप्र वस्तुतः तथा तत्त्वतः ब्राह्मण के स्थान पर सूदखोर महाजन है। जड़ पारम्परिक सोच का सदैव ही विकराल शोषण होता है। शंकर के साथ भी ऐसा ही हुआ। उसने कर्ज़े के तौर पर सवा सेर गेहूँ लिया। इसको चुकाने के लिए उसने साठ रुपए किश्तों में, समय–समय पर विप्र महाराज को दिए। लेकिन वह राशि सवा सेर गेहूँ का ब्याज बन गई। वह आजीवन कर्जदार है, 'दास' है। यह चक्र भी अनवरत चलता है। उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र इसी जातिचक्र की लपेट में आने को अभिशप्त है। ''ब्राह्मण का कर्जा'' चुकाने और ''उस जनम के लिए काँटे क्यों बोऊँ'' की मानसिकता दलित समाजों के 'इस' जीवन की चालक–शक्ति बन चुकी थी।[7] मुंशी प्रेमचंद ने अद्भुत सामर्थ्य का परिचय देते हुए इन संदर्भों में शोषक और शोषित समूहों की जड़ सोच की वाणी प्रदान की है।

भारतीय संस्कृतियाँ अधिकाधिक धर्मप्रवण मानी जाती हैं। यह भी ऐतिहासिक सत्य है कि हमारे राष्ट्र की सामाजिक व्यवस्थाएँ धर्म के दर्शन पक्ष (अद्वैतवाद आदि) से सामान्य तौर पर पराङ्मुख रही है। इसीलिए निहित स्वार्थवादी गिरोह अपने क्षुद्र लक्ष्यों को पूरा करने में सफलता प्राप्त करते रहे हैं। प्रेमचंद ने अपनी अनेक कहानियों में इसके वर्णन किए है। 'गरीब की हाय' का राम सेवक निराश्रित–असहाय विधवा के धन का अपहरण करने में तनिक भी नहीं झिझकता।[8] यही दुष्कर्म 'गुप्तधन' का हरिदास करता है। उसे अनाथ–निस्सहाय बालक का धन चुराने में कोई हिचक नहीं होती।[9] यह 'सत्य' भी अपनी जगह पूरी शक्ति से स्थापित है कि रामसेवक और हरिदास धर्म में निहित मानवीय मूल्यवत्ता से परिचित होने के कारण भयाक्रान्त भी हैं। लेकिन धन का लोभ उनके धर्म–बोध को नेपथ्य में डाल कर उनसे जघन्य कर्म करवाने को विवश कर देता है। 'बेटों वाली विधवा' का कामतानाथ इस दृष्टि से पूर्ण कुत्सित एवं घृण्य चरित्र के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होता है। वह सांस्कृतिक परम्पराओं एवं धार्मिक मूल्यों से पूर्ण शून्य इकाई है। एक तात्कालिकतावादी हीन चरित्र के रूप में वह विपरीत संदर्भों में ही सही, एक यादगार पात्र है। कामतानाथ अपने पिता की तेरहवीं में अतिथियों को वह शोरबा खिलाने से परहेज़ नहीं करता, जिसमें मरी चुहिया गिर गई थी– शर्त्त केवल इतनी है कि भोज में शामिल अतिथियों को

इस घटना का पता नहीं चले।[10] कहते हैं कि सत्य कल्पना से भी अधिक विलक्षण होता है।[11] कामतानाथ ऐसा ही घृणास्पद चरित्र बन कर उभरता है। धर्म–बोध की दृष्टि से 'खून–सफेद' कहानी मर्मस्पर्शी है। शैशव में भागा–खोया साधो कई वर्षों बाद घर आ कर भी लौटने को विवश है। तथाकथित–आरोपित धार्मिक रूढ़ियाँ उसकी माता की ममता पर विजय प्राप्त करती हैं। यह दर्दनाक विजय है।[12]

आर्थिक दरिद्रता और शोषण का चरम–परम यथार्थपरक वर्णन–चित्रण करके विसंगत–अमानुषिक व्यवस्थाओं के पूर्ण अनावृत–नग्न रूप से पाठकों को परिचित कराने में प्रेमचंद को अपार सफलता प्राप्त हुई है। अंग्रेज़ों के आगमन ने भारत के स्वावलंबी ग्राम को परावलंबी एवं शक्तिहीन करके दरिद्र बनाया, यह एक निर्विवाद ऐतिहासिक तथ्य है। 'सती' कहानी का केन्द्रीय चरित्र कल्लू बीमार होने पर बिना दवा–चिकित्सा के प्राणत्याग देता है।[13] ऐसी अनेक कहानियाँ हैं। लेकिन इस संदर्भ में 'पूस की रात' मील का पत्थर है। कड़कड़ाती सर्दी की रात में (दिन की तो बात ही क्या, बल्कि बारहों मास) भी जागने की विवश कृषक हल्कू को कंबल उपलब्ध नहीं हो पाता। ऐसे में श्रम से विरक्ति एक दर्दनाक सामाजिक–आर्थिक सत्य है। किसान को फसल संतानवत् प्रिय होती है, लेकिन हल्कू नील गायों द्वारा उसे नष्ट होता देख कर प्रसन्न है कि पूस की रात में खेत की रखवाली करते हुए रात में खुले में जागना तो नहीं पड़ेगा।[14] इसी भाँति दूसरे रूप में ही सही, 'कफन' के माधव और घीसू भी वास्तव में श्रम इसलिए नहीं करते क्योंकि मेहनत करने वाले किसानों की स्थिति उनसे बहुत बेहतर नहीं है।[15] प्रेमचंद ने विकट शोषण पर टिकी आर्थिक व्यवस्थाओं के नग्न रूप को पाठकों के समक्ष विचारार्थ रखा है। 'सती' में प्रेमचंद लिखते हैं कि दरिद्रता में बीमारी कोढ़ में खाज है।[16] इन्हीं बोध से प्रेरित होने के कारण प्रेमचंद युगीन मानसिकताओं को विलक्षण एवं भिन्न रूपों को व्यक्त करने में सफल हुए है। एक ओर 'कायर' का सुविधावादी–यथास्थितिवादी केशव है[17], दूसरी और 'ब्रह्म का स्वाँग' का समझदार बनने का पाखण्ड करके वाणी को कर्म से पूर्णतया भिन्न करने का नाटक करने वाले 'पुरुष'– यह 'पुरुष' विसंगत व्यवस्थाओं से उत्पन्न विषमता को ईश्वर की देन बतला कर स्वाँग रचता है।[18] एक ओर वेश्या आबादीजान को अशर्फी तथा राम सीता–लक्ष्मण का अभिनय करने वालों को ठेंगा दिखाने वाले 'रामलीला' के पिता जी और चौधरी हैं,[19] तो दूसरी ओर धर्मशक्ति सम्पन्न अजेय 'नमक का दारोगा' वंशीधर।[20]

प्रेमचंद ने ''दो बैलों की कथा'' के प्रथम अनुच्छेद में अति संक्षिप्त, बल्कि सांकेतिक रूप में भारतीयों के शांतिप्रिय–संतोषी स्वभाव की चर्चा की है।[21] ऐसा प्रतीत होता है कि वे राष्ट्रवादी संदर्भों में एक सीमा तक आक्रामकता एवं प्रखरता चाहते हैं।

कथा–सम्राट की नारी की स्थिति की संकेतक कहानियाँ बहुत प्रभावी हैं। उनके यहाँ एक ओर 'होली के उपहार' की सत्याग्रही–स्वदेशी–पक्षधर सुखदा,[22] दूसरी ओर 'कायर' की आत्मघात को विवश प्रेमा[23] और तीसरी ओर सामाजिक नियमों से त्रस्त्र 'नैराश्य लीला' की कैलाश कुमारी[24] है। इन सबके बीच 'सद्गति' की कभी–कभार पति से पिटती पंडिताइन,[25] 'सती' की मुलिया[26] का आदर्श, 'शान्ति' (भाग एक) की निजता प्राप्त करने का असफल प्रयत्न करती सुन्नी,[27] 'बेटों वाली विधवा' की संत्रस्त हो कर आत्मघात करती विधवा माता फूलमती,[28] एवं जोड़ने की प्रवृत्ति वाली 'बड़े घर की बेटी' आनंदी[29] है। प्रेमचंद ने नारी के विलक्षण चित्र अंकित किए हैं।

संदर्भ

1. अरस्तू की प्रसिद्ध उक्ति
2. महाभारत, वेद व्यास
3. रामचरिमानस, गोस्वामी तुलसीदास
4. हिन्दी साहित्य, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. 'कायर' प्रेमचंद
6. 'सद्गति' प्रेमचंद
7. 'सवा सेर गेहूँ' प्रेमचंद
8. 'गरीब की हाय', प्रेमचंद
9. 'गुप्तधन', प्रेमचंद
10. 'बेटों वाली विधवा', प्रेमचंद
11. ''ट्रुथ इज़ स्ट्रेंजर दैन फिक्शन'', अंग्रेजी की प्रसिद्ध उक्ति
12. 'खून सफेद', प्रेमचंद
13. 'सती', प्रेमचंद
14. 'पूस की रात', प्रेमचंद
15. कफ़न' प्रेमचंद
16. 'सती', प्रेमचंद
17. 'कायर', प्रेमचंद
18. 'ब्रह्म का स्वाँग', प्रेमचंद
19. 'रामलीला', प्रेमचंद
20. 'नमक का दरोगा, प्रेमचंद
21. 'दो बैलों की कथा', प्रमचंद
22. 'होली का उपहार', प्रेमचंद
23. 'कायर', प्रेमचंद
24. 'नैराश्य लीला', प्रेमचंद
25. 'सद्गति', प्रेमचंद
26. 'सती', प्रेमचंद
27. 'शान्ति (भाग एक), प्रेमचंद
28. 'बेटों वाली विधवा, प्रेमचंद
29. 'बड़े घर की बेटी', प्रेमचंद